[श्री चन्द्र पाल शैलानी]

वहां दिल्ली दूरदर्शन का प्रोग्राम नहीं देखा जा सकता क्योंकि यहां की रेंज केवल 68 किलोमीटर है। फलतः इस इलाके के लोग एशियाड 82 और गुट निरपेक्ष सम्मेलन की कार्यवाहियों को दूरदर्शन पर देखने से वंचित रहे। इसी प्रकार स्वतंत्रता दिवस समारोह व गणतन्त्र दिवस परेड को भी दूरदर्शन द्वारा देखने से वंचित रहते हैं।

सरकार का इरादा आगरा में माइक्रोवेव द्वारा रिले केन्द्र स्थापित करने का है। अतः उसे शीघ्र ही बनाया जाए और दिल्ली में प्रीतमपुरा में जो आर० सी० सी० टावर बनाया जा रहा है, उसे भी जितना जल्दी हो पूरा कराया जाए।

मेरा मन्त्री महोदय से अनुरोध है कि जब तक आगरा में रिले केन्द्र बने या दिल्ली का नया टावर कार्य करे, मथुरा में एक लघु शक्ति टी० वी० ट्रांसमीटर तुरन्त लगाने की कृपा करें ताकि उस क्षेत्र के हजारों उत्सुक दर्शकों की निराशा दूर हो सके।

12.23 hrs.

[MR. DEPUTY SPEAKER *in the Chair*]

(iii) Financial assistance to people engaged in Shellac industry for its proper development

श्रीमती माधुरी सिंह (पूर्णिया) : उपाध्यक्ष महोदय, लाख उद्योग का हमारे देश में महत्वपूर्ण स्थान है। खाद्य उत्पादन, आदिवासी कल्याण और विदेशी मुद्रा की आमदनी से इसका गहरा सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। लाख उद्योग अधिकांशतः पिछड़े इलाकों में केन्द्रित है। बिहार में इसका सर्वाधिक उत्पादन होता है। भारत में उत्पन्न लाख का पचास प्रतिशत अकेले छोटा नागपुर से मिलता है। लाख प्रायः बेर, पलास और कुसुम वृक्षों पर उपलब्ध होती है। बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में लाख उत्पादन की महत्वपूर्ण भूमिका है। ग्रामीण रोजगार की तो इसमें असीमित संभावनायें हैं। लाख उद्योग का समुचित विकास करने पर पर्यावरण सन्तुलन, खाद्य उत्पादन, आदिवासियों की आय वृद्धि और विदेशी मुद्रा अर्जन में मदद मिलेगी। केन्द्र सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई लाख उत्पादन योजना से लगभग चालीस लाख आदिवासियों को लाभ मिलेगा। इस योजना से ग्रामवासियों को लाभ मिलेगा। इस योजना से ग्रामवासियों को लाख के वैज्ञानिक ढंग से उत्पादन में सहायता मिलेगी। लाख का उपयोग दस्तकारी, छपाई की स्याही, औषधियां, श्रंगार प्रसाधन, बिजली के उपकरण, कागज, चूड़ियाँ, चश्मे के फ्रेम आदि विभिन्न चीजों के उत्पादन में किया जाता है। 1981-82 में हमने 490 लाख रुपए का लाख अमरीका को निर्यात किया। लाख का आयात करने वाले अन्य देश है पश्चिमी जर्मनी, ब्रिटेन, चीन, इंडोनेशिया, सिंगापुर, हाँगकांग और मलेशिया। मैं भारत सरकार से प्रार्थना करती हूं कि वह वाणिज्यिक बैंकों को हिदायत दे कि लाख को उद्योग मानकर ऋण उपलब्ध कराया जाए। इसके अतिरिक्त रिसर्च, लाख तैयार करने की सस्ती विधि, निर्यात के लिए जहाज में कम भाड़े की दरें और बिचौलियों के शोषण से लाख उप्पादकों को संरक्षण प्रदान किया जाए। आज थाईलैंड से हमारा कड़ा मुकाबला है। केन्द्र सरकार इस दिशा में एकीकृत नीति अपनाए तो इसका निर्यात 18,000 टन अर्थात् तीस करोड़ रुपए तक बढ़ सकता है।

(iv) Construction of a bridge over the Ganga at Rajghat, Kannauj (U.P.)

श्री छोटे सिंह यादव (कन्नौज): उपाध्यक्ष